दिनांक :- 02-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

वर्ग :- B.A पार्ट (II) प्रतिष्ठा द्वितीय खंड इतिहास

सिक्के :- सिक्कों (coins) के अध्ययन का मुद्राशास्त्र कहा जाता है। प्राचीनतम सिक्के सोना, चाँदी, सिक्के, ताँबा, कॉसा सीसा और पोटिन के मिलते है। भारत के प्राचीनतम सिक्को पर केवल चिह्न उत्कीर्ण है, कोई लेख नही है। ये आहत सिक्के या पंचमार्क्ड सिक्के कहलाते है, जो ईसा पूर्व पांचवी सदी के है। बाद के सिक्को पर तिथियाँ, राजाओं एवं देवताओं के नाम अंकित होने लगे। आहत सिक्कों की सबसे पुरानी निधियाँ (होड्‌र्स) पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा मगध से प्राप्त हुई है। हिन्द-यवनों ने भारत में सिक्का निर्माण की डाई विधि का प्रचलन किया। सर्वप्रथम हिन्द-यूनानियों ने ही स्वर्ण मुद्राएं जारी की सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण मुद्राएं कुषाणों ने तथा सबसे अधिक स्वर्ण मुद्राएं गुप्तों ने जारी की सातवाहनों ने सीसे की मुद्रा जारी की थी।

अन्य पुरातात्विक साधन

अभिलेखो एवं सिक्को के अलावा महलो एवं मंदिरो, स्मारको, मृद्भाण्ड, चित्रकला आदि के आधार पर भी प्राचीन भारत के विविध पहलुओ की जानकारी प्राप्त होती है। महलो एवं मंदिरो तथा उनके अवशेषो की प्राप्ति से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है, साथ ही सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक अवस्था का भी आभास मिलता है।

स्मारको को दो भागो मे बाट कर देखा जा सकता है- देशी तथा विदेशी। हड़प्पा, मोहन जोदड़ो, नालंदा, हस्तिनापुर इत्यादि देशी स्मारक, जबकि कम्बोडिया का अंकोरवाट मंदिर, जावा का बोरोबदूर मंदिर तथा बाली से प्राप्त मूर्तियाँ विदेशी स्मारक है। बोगियो के मस्तान से प्राप्त प्रतिमाओ पर अंकित तिथियाँ काल क्रम स्थापना मे विशिष्ठ योगदान देती है। मूर्तियाँ से

मूर्तियाँ सांस्कृतिक तथा कला सम्बंधी ऐतिहासिक

स्त्रोत है, जिससे सामान्य जनता की धार्मिक प्रवृत्तियों तथा आस्था का लेखा-जोखा मिलता है। गांधार कला एवं मथुरा कला मूर्तिकला की प्रमुख शैलियाँ थी। सारनाथ, भरहुत बोधगया एवं अमरावती मूर्तिकला के अन्य प्रमुख केन्द्र थे। मृद्भाण्डों से भी कलात्मक प्रगति की जानकारी मिलती है। हड़प्पाकाल के लाल मृद्भाण्ड, उत्तरवैदिक काल के चित्रित धूसर मृद्भाण्ड तथा मौर्य युग की पहचान उत्तरी काले पॉलिश वाले मृद्भाण्ड से की जाती है।

चित्रकला जीवन की विभिन्न पक्षों को स्पष्टता देने वाला प्रमुख ऐतिहासिक स्त्रोत है, जिससे काल विशेष की जीवन की उन्नति तथा भावुकता का पता चलता है। प्राक्-ऐतिहासिक गुफाओं विशेषकर भीमबेटका (मध्य प्रदेश) का गुफा चित्र एक मुख्य पुरातात्विक स्रोत है जिससे पूर्व ऐतिहासिक काल की सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश पड़ता है। अजन्ता तथा बाघ के उन्नत गुफा चित्रों से गुप्तकाल की उन्नत सांस्कृतिक दशा का पता चलता है।